INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

लोक संस्कृति में 1857 की क्रांति : एक सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन

आशीष राठौर[1]
शोध छात्र, वी०रा०अ०लो० राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली (उ०प्र०)
डॉ० दिनेश सिंह[2]
असिस्टेंट प्रोफेसर, वी०रा०अ०लो० राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली (उ०प्र०)
Email-drdineshhistory@gmail.com
Affiliated to MJP Rohikkhand University Bareilly (U.P.)

शोध सार

1857 का विद्रोह, जिसे प्रायः भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है, भारतीय इतिहास लेखन में एक केंद्रीय स्थान रखता है। यद्यपि औपनिवेशिक और अभिजात वर्गीय दृष्टिकोण लंबे समय तक इतिहास लेखन पर हावी रहे हैं, लोक संस्कृति, जिसमें लोकगीत, गाथाएँ, मौखिक परंपराएँ और स्थानीय स्मृतियाँ शामिल हैं–इस घटना को समझने के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह शोध पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि लोक परंपराओं ने विद्रोह की जनधारणा को कैसे संरक्षित किया, सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना को कैसे अभिव्यक्त किया और प्रतिरोध के साधन के रूप में कैसे कार्य किया। यह तर्क दिया गया है कि लोक संस्कृति ने न केवल विद्रोह के भावनात्मक और सामाजिक पहलुओं को दर्ज किया, बल्कि जनता के बीच सामूहिक स्मृति और प्रारंभिक राष्ट्रवादी भावना को भी आकार दिया।

शब्द कुंजी : 1857 का विद्रोह, लोक संस्कृति, सबालटर्न इतिहास, जनस्मृति, लोकगीत, सांस्कृतिक प्रतिरोध, लोक गाथाएं

प्रस्तावना

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसमें सिपाहियों, किसानों, कारीगरों और स्थानीय अभिजात वर्ग सहित विभिन्न सामाजिक समूह शामिल थे। 1857 की क्रांति केवल एक राजनीतिक और सैन्य विद्रोह नहीं थी, बल्कि यह भारत की समृद्ध लोक संस्कृति में भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पारंपरिक इतिहास लेखन मुख्यतः औपनिवेशिक अभिलेखों पर आधारित रहा है, जो अक्सर पक्षपाती और सीमित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। इसके विपरीत, लोक संस्कृति ''नीचे से इतिहास'' प्रस्तुत करती है, जो आम जनता की आवाज़ को सामने लाती है–जैसे लोकगीत, लोककथाएँ और मौखिक परंपराएँ प्रतिभागियों के अनुभवों और भावनाओं को संरक्षित करती हैं तथा प्रतिरोध और बलिदान का महिमामंडन करती हैं, विशेष रूप से उन वर्गों की, जो लिखित इतिहास में अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं, जैसे किसान, महिलाएँ और निम्न वर्ग। आधिकारिक अभिलेखों से परे, इस विद्रोह की स्मृतियाँ लोकगीतों, वीरगाथाओं, मौखिक परंपराओं और स्थानीय कथाओं के माध्यम से संरक्षित और प्रसारित होती रही हैं।[1] लोक संस्कृति में रानी लक्ष्मीबाई, कुँवर सिंह और तात्या टोपे जैसे नायकों को केवल ऐतिहासिक व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि साहस और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, यह विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोह की अलग–अलग धारणाओं को भी उजागर करती है।[2] यह शोध पत्र इस बात का अध्ययन करता है कि इस क्रांति की स्मृति भारतीय लोक संस्कृति के माध्यम से कैसे संरक्षित और प्रसारित हुई। अतः लोक संस्कृति के माध्यम से 1857 की क्रांति का अध्ययन, अभिजात्य इतिहास और जनस्मृति के बीच सेतु का कार्य करता है।

ऐतिहासिक स्रोत के रूप में लोक संस्कृति

लोक संस्कृति से तात्पर्य किसी समुदाय की सामूहिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से है, जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित होती रही है। इसमें लोकगीत और गाथाएँ, मौखिक कथाएँ और किंवदंतियाँ, अनुष्ठानिक प्रदर्शन और त्यौहार, कहावतें तथा प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ को शामिल किया जाता है। लिखित स्रोतों के विपरीत, लोक परंपराएँ गतिशील होती हैं और जनजीवन के अनुभवों को दर्शाती हैं। ये वैकल्पिक अभिलेखागार के रूप में कार्य करती हैं, विशेष रूप से जहां लिखित दस्तावेजीकरण दुर्लभ या पक्षपातपूर्ण हो। विद्वान इस बात पर जोर देते हैं कि लोकगीत "लोगों के दृष्टिकोण के प्रामाणिक अभिलेख'' हैं, जो उनकी भावनाओं, आकांक्षाओं और प्रतिरोध को समाहित करते हैं।[3]

1857 के लोकगीत और गाथाएँ

कई लोकगीतों में रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह और तात्या टोपे जैसे नायकों की वीरता का वर्णन मिलता है। प्रसिद्ध पंक्ति–''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी" लोक परंपरा से ही उत्पन्न हुई थी और बाद में साहित्यिक रूप में लोकप्रिय हुई। इन गीतों में प्रमुख रूप से वीरता और बलिदान, औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध, विद्रोहियों का नैतिक सत्य आदि का चित्रण मिलता है।[4]

लोक संस्कृति क्षेत्र के अनुसार भिन्न–भिन्न रूपों में प्रकट होती है, उत्तर भारत में बुंदेली और अवधी गीतों में स्थानीय नायकों का गुणगान किया गया। असम में मणिराम दीवान के बारे में गाथाओं ने क्षेत्रीय प्रतिरोध की कहानियों को संरक्षित किया। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में मौखिक परंपराओं ने किसानों की भागीदारी को उजागर किया। मौखिक स्रोत विद्रोह के उन पहलुओं को उजागर करते हैं जिन्हें अक्सर आधिकारिक अभिलेखों में अनदेखा किया जाता है, जो व्यापक जनभागीदारी का संकेत देते हैं।[5]

प्रतिरोध के माध्यम के रूप में लोक संस्कृति

लोक संस्कृति केवल वर्णनात्मक ही नही, बल्कि प्रदर्शनकारी और राजनीतिक भी थी। एक बड़े पैमाने पर निरक्षर समाज में लोकगीतों ने क्रांतिकारी विचारों के प्रसार के साधन के रूप में तथा जनसमूह को संगठित करने के उपकरण के रूप में और गुप्त संदेशों को संप्रेषित करने के माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कमल के फूल और चपाती जैसे प्रतीक व्यापक रूप से प्रचलित थे और लोकप्रिय विश्वास प्रणालियों में समाहित थे, जिससे विद्रोह को एक अर्ध धार्मिक और रहस्यमय आयाम प्राप्त हुआ। लोक प्रदर्शनों ने अक्सर औपनिवेशिक सत्ता की सूक्ष्म रूप से आलोचना की और स्वदेशी पहचान को सुदृढ़ किया, इस प्रकार सांस्कृतिक प्रतिरोध के रूप में कार्य किया।[6]

लोक संस्कृति के लैंगिक आयाम

लोक संस्कृति आधिकारिक विवरणों की तुलना में विद्रोह में महिलाओं की भूमिका को अधिक स्पष्ट रूप से उजागर करती है। रानी लक्ष्मीबाई वीरता की प्रतीक बन गईं। अजीजन बाई जैसी महिलाएं मौखिक कथाओं में सक्रिय सहभागी के रूप में दिखाई देती हैं। यह प्रस्तुतियां पारंपरिक इतिहास लेखन को चुनौती देतीं हैं और उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रमुखता प्रदान करती हैं।[7]

सामूहिक स्मृति और लोक संस्कृति

सामूहिक स्मृति को आकार देने में लोक परंपराओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने घटनाओं के स्थानीय संस्करणों को संरक्षित किया तथा पीढ़ियों तक ऐतिहासिक चेतना का संचार किया। उन्होंने राष्ट्रवादी भावना के उदय में योगदान दिया। लोक कथाओं ने अक्सर ऐतिहासिक हस्तियों को पौराणिक नायकों में रूपांतरित कर दिया, इतिहास को मिथक के साथ मिला दिया। विद्वानों का तर्क है कि लोकप्रिय संस्कृति "भूलने के विरुद्ध स्मृति" के रूप में कार्य करती है, जो विद्रोह की वैकल्पिक व्याख्याओं को बनाए रखती है।[8]

लोक स्रोतों की सीमाएँ

लोक संस्कृति मूल्यवान होते हुए भी, उसकी कुछ सीमाएं हैं– व्यक्तिपरकता और अतिशयोक्ति, घटनाओं का मिथकीकरण, कालानुक्रमिक सटीकता का अभाव, क्षेत्रीय पूर्वाग्रह आदि। अतः इसका उपयोग अन्य स्रोतों के साथ आलोचनात्मक विश्लेषण के साथ किया जाना चाहिए।

इतिहास लेखन में महत्व

लोक संस्कृति इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह "नीचे से इतिहास" प्रस्तुत करती है और उन आम लोगों की आवाज़ों को सामने लाती है जिन्हें अक्सर आधिकारिक अभिलेखों में नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। लोक संस्कृति सामाजिक संरचनाओं, लैंगिक भूमिकाओं और सामूहिक पहचानों को भी उजागर करती है। हालांकि कभी–कभी यह व्यक्तिपरक होती है, फिर भी यह वास्तविक जीवन की परिस्थितियों और प्रतीकात्मक अर्थों की बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती है। इस प्रकार, यह इतिहास को अधिक समावेशी, और व्यापक समाज का प्रतिनिधि बनाती है।[9]

निष्कर्ष

1857 का विद्रोह, जब लोक संस्कृति के परिपेक्ष्य से देखा जाता है, तो महज एक सैन्य विद्रोह नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में उभरता है। लोकगीत, गाथागीत और मौखिक परंपराएं विद्रोह में निहित भावनात्मक गहराई, जनभागीदारी और सांस्कृतिक प्रतिरोध को उजागर करती हैं। ये अमूल्य ऐतिहासिक स्रोत हैं जो आम लोगों की आवाजों को शामिल करके इतिहास का लोकतंत्रीकरण करते हैं। इस प्रकार, 1857 के अध्ययन में लोक संस्कृति को एकीकृत करने से भारत के अतीत की अधिक समग्र और समावेशी समझ प्राप्त होती है।

सन्दर्भ

1. *नारायण, बद्री (2007), लोक संस्कृति में राष्ट्रवाद, वाणी प्रकाशन*
2. *रॉय, तापती (1994), द पोलिटिक्स ऑफ ए पापुलर अपराइजिंग : बुन्देलखण्ड इन 1857, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली*
3. *गुहा, रणजीत (1983), एलीमेन्ट्री अस्पेक्ट्स ऑफ पीजेन्ट इनसर्जेन्सी इन कोलोनियल इण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली*
4. *कुमारी चौहान, सुभद्रा (1930), झांसी की रानी, प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन*
5. *मुखर्जी, रूद्रांशु (1984), अवध इन रिवाल्ट 1857–58, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली*
6. *चौधरी, एस. बी. (1957), सिविल रिबेलियन इन द इण्डियन म्यूटिनीज 1857–59, कलकत्ता वर्ल्ड प्रेस*
7. *सिंह, हरलीन (2014) द रानी ऑफ झांसी : जेन्डर, हिस्ट्री एण्ड फेबल इन इण्डिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस*
8. *थापर, रोमिला (2013), द पास्ट बिफोर अस : हिस्टोरिकल ट्रेडीसन्स ऑफ अर्ली नार्थ इण्डिया, परमानेन्ट ब्लैक नई दिल्ली*
9. *वनसीना, जन (1985) ओरल ट्रेडिशन एज हिस्ट्री, यूनिवर्सिटी ऑफ विसकन्सिन प्रेस*

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.